University Grant Commission

(WRO)

Proposal (11th Plan)

Finance Assistance

For

Minor Research Project

in

National Language : Hindi

Title

“Aathhvem avam Navem Dashak Ki Kavita Mein Rajnitik Sandarbha”

Principal Investigator

Neela Pundalik Mahadik

Asst. Professor

Dept. of Hindi

Abasaheb Garaware College,

Karve Road, Pune – 411004

2011-2014

"आठवें एवं नवें दषक की हिंदी कविता में चित्रित राजनीतिक संदर्भ"

लघु षोध परियोजना

(विद्यापीठ अनुदान आयोग)

प्रा. नीला महाडिक

असिस्टंट प्रोफेसर,

हिंदी विभाग,

आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय

कर्वे पथ, पुणे – 411004

2011–2014

नवे दशक की कविता में. राजनीतिक संदर्भ

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है। एक समय था जब वह अकेला रहता था परंतु किसी एक निर्बल क्षण में उसने समय को अपने आपको सौंप दिया। राज्य वस्तुत: इसका ही विकसित रूप है। राज्य की उत्पत्ति वर्गों के संघर्षो को निर्णित करने की है। राज्य की उत्पत्ति वर्गों के संघर्षो को निर्णित करने की आवश्यकता के लिए हुई। परंतु वह उसी वर्ग के हितों की रक्षा कर सकी जिसके हाथों राज्य की बागडौर हो। राज्य मनुष्य के सामाजिक जीवन का सर्वाधिक विकसित रूप है। व्यक्ति में उसके पूर्व मानव की प्रतिष्ठा करना ही समाज और राज्य का उद्देश्य होता है। मनुष्य में पूर्व मानव की प्रतिष्ठा तभी हो सकती है जब कि उसके जीवनयापन की दशाओं में परिवर्तन किया जाए और यह राज्य तथा उसकी नीति—रीति के माध्यम से ही सार्थक हो सकता है। राज्य की नीति याने राजनीति। राज्य को सुचारु ढंग से संचालित करने के लिए जो नीतियॉ अपनाई जाती हैं, उन्हें 'राजनीति' कहते हैं। पुराने जमाने में राजा, राज्य, प्रजा, राजा का कर्तव्य इसके साथ राजा के लिए साम, दाम, दंड, भेद, नीति का अधिकार आदि का अंतर्भाव 'राजनीति' में होता था। धीरे—धीरे राजनीति का अर्थ बदल गया। आज राज्यों का स्थान राष्ट्रीय राज्यों ने लिया है। डॉ. नेमिचंद जैन के अनुसार आज राजनीति शब्द व्यक्ति गुट, संस्था, राज्य, राष्ट्र के साथ जुड़कर व्यापक अर्थ में प्रविष्ट हो चुका है। आधुनिक काल तक आते—आते राजनीति का अर्थ Politics हुआ। राजनीति का सुचारु रुप इसमें निहित था। अब राजनीति का काला पक्ष इतना उजागर होने लगा कि 'राजनीति' शब्द मुहावरा बन गया। उसके अर्थ हुए — दॉवपेच लड़ना, छलकपट, किसी को फॅसाना, मारना, काटना, काले कारनामें, कुर्सी के लिए होड़ा—होड़ी करना, कुर्सी हासिल करना, पद छीनना, षडयंत्र रचाना, चुनाव लड़ना, धोखा, फरेब, किसी को मुॅह के बल पर गिराना, किसी की टॉगे खींचना, कूटनीति से पेश आना। आज मानव नियति को शासित करनेवाली दो शक्तियॉ हैं, एक है राजनीति और दूसरी है विज्ञान। राजनीति मनुष्य की सामाजिक स्थिति और उसके भविष्य को प्रभावित करती है। राजनीति समाज जीवन का एक अंग है। मनुष्य इससे दूर नहीं रह सकता।

मनुष्य जीवन की अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति याने कविता। साहित्यकार अपनी रचना में समाज का चित्रण करता है। उस समाज जीवन में राजनीति का अंतर्भाव रहता है। अत: साहित्य में राजनीति का चित्रण होना स्वाभाविक है। हिंदी कविता में स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता के बाद राजनीति के कई संदर्भ मिलते हैं। कहीं राजनीतिक अभिप्रायों को स्पष्ट करने के लिए संश्लिष्टता लाई गई तो कहीं जनता की पीड़ा जानकर, राजनीतिक आशय समझा गया है। कहीं भोलेपन और कलात्मक संयम के साथ गैर राजनीतिक ढंग से लिखी गई कविता में शासन की करतूतों को उद्घाटित किया है। कहीं राजनीतिक पाखंड और अत्याचार को सामान्य मनुष्य के जीवन के किसी ठोस और अमानवीय प्रसंग में मूर्त किया है। हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आजतक बहती हुई काव्यधारा अपने साथ चेतनाओं को साथ लेकर आगे बढती रही। उन चेतनाओं में प्रमुख है राजनीतिक चेतना। आठवें, नवें दशक की कविता में अपनी परिस्थिति के अनुसार राजनीति का चित्रण हुआ है।

जहॉ तक नवें दशक की कविता की बात हैं, दशक के प्रमुख कवि हैं — लीलाधर जगूडी, मंगलेश डबराल, बलदेव वंशी, प्रयाग शुक्ल, रघुवीर सहाय, मदन डागा, ललित शुक्ल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजेश जोशी, वेदप्रकाश अमिताभ, अशोक चक्रधर, विनय दुबे, रेवती रमण शर्मा, ब्रजेश त्रिपाठी, लक्ष्मीकांत वर्मा, विष्णु खरे, कुमार अंबुज, यतींद्र तिवारी, प्रताप सहगाल, डॉ. सुधेश, देवेंद्र, मनमोहन लाल।

नवे दशक में देश की राजनीतिक परिस्थिति में बहुत—से उतार—चढ़ाव आए। आपातकाल के बाद इंदिराजी के नेतृत्व में कॉग्रेस पक्ष आगे बढ़ा, चुनाव हुए, गडबड घोटाले भी हुए फिर एक बार कॉग्रेस हार गई। जनता पक्ष विजयी हुआ। इंदिरा गांधी की हत्या हुई, उसके बाद जनता पक्ष का विघटन हुआ। राजीव गांधी के नेतृत्व में देश की स्थिति सॅवर गई। पंजाब में कॉग्रेस की हार हुई और अकालियों की सरकार बनी। ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद पुलिस को अमृतसर स्वर्ण मंदिर में प्रवेश करना पड़ा। बोफोर्स प्रकरण की उद्भवना हुई। पंजाब और दिल्ली का माहोल बिगड़ गया। मीरत में राम जांमतय दंगे हुए। विश्वनाथप्रसाद सिंग ने मंडल आयोग के रिपोर्ट का

पुनर्रावलोकन किया। सन १९९० में राम मंदिर और बाबरी मस्जिद को लेकर आंदोलन शुरु हुआ। भाजपा ने उसमें हिस्सा लिया। चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने। पंजाब में राष्ट्रपति शासन जारी हुआ। लोकसभा का विसर्जन हुआ। सन् १९८१ से लेकर १९९० तक का कालखंड जनमत – विस्फोट का था। नवें दशक का साहित्य इससे अछूता नहीं रहा। तत्कालीन राजनीति के विविध आयामों का चित्रण कविता में हुआ है। सत्ता की भूख, लालसा, खोखले आदर्श, नेताओं का स्वार्थ, शासकों की दुरंगी नीति, शोषण, व्यवस्था की दुरावस्था, मूल्यों की गिरावट, मूल्य–विघटन, अनेक–समस्याएँ, राजनीतिक–संघर्ष, गठबंधन संघर्ष, क्रांति, विरोध, शासन को सँभालने के तरीके, आदि की अभिव्यक्ति इस दशक की कविता में हुई है।

नवें दशक की कविता में राजनीति के विविध आयाम चित्रित हुए हैं।

सत्ता – सत्ता का अर्थ है शासन के लिए प्राप्त अधिकार। भारत में सन् १९५० में संविधान लागू हुआ और देश 'संघराज्य' बना। सन् १९७० के बाद देश में कॉंग्रेस की सत्ता थी। फिर सन् १९७८ के बाद जनता – शासन शुरु हुआ। फिर कॉंग्रेस की सत्ता आई। ये सारे उतार–चढ़ाव सत्ता के कारण होते रहे। सत्ता के मद में डूबकर व्यक्ति कुछ भी करता है, विवेकहीन कृत्य तक। हिंदी कविता में राजनीति के संदर्भ कई तरह से व्यक्त हुए। कवि नागार्जुन ने इंदिरा गांधी जी पर व्यंग्य किया है।

"इंदुजी, इंदुजी क्या हुआ आपको?

सत्ता की मस्ती में

भूल गई बाप को?" (१)

युगीन राजनीति में सत्ता पक्ष की निरंकुशता दिखाई देती है। चुनाव के पहले मतदाता का मूल्य होता है लेकिन चुनाव के बाद उसकी उपेक्षा होती है। नैतिक आदर्शों की दुहाई देने वाले जनता का शोषण करतें हैं। सत्ता हथियाने के बाद नेताओं की नज़र सत्ता और धन, नाम और शोहरत पर टिकी रहती है। यह देखकर 'आज़ादी' के अर्थ की पुनर्समीक्षा करने की जरुरत महसूस होती

है। कवि धूमिल की तरह ललित शुक्ल भी आज़ादी का अर्थ ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं —

“क्या आज़ादी का यही अर्थ होता है?

कि मानव मानव के लिए बारूद बोता है।” (२)

सत्ता जितनी शक्ति—संपन्न हो जाती है, व्यक्ति उतना ही सत्वहीन हो जाता है। शासक सत्ता हासिल करने के हेतु कुचक्र करता है, षड्यंत्र रचाता है। पहले भी और बाद में भी सत्ता पर आधिपत्य रखने के हेतु कुचक्र रचाता है। कवि दिनेश रघुवंशी के शब्दों में .....

“मर गए हैं कुर्सियों के वास्ते

जी उठेंगे कुर्सियों को देखकर।” (३)

‘सत्ता’ की लालसा में सत्ताधारी तलवार की नोक पर शासन चलाते हैं। स्वार्थ लोलुप नेता कुर्सी के लिए सभ्यता की खाल ओढ़ते हैं वास्तव में वे भेडिए होते हैं। कवि रामदरश मिश्र इन्हें सॉप, गिद्ध, भेड़िए की उपमाएँ देते हैं।

आज की राजनीति ने उग्र रूप धारण किया है। उसने धर्म के क्षेत्र में जहर घोल दिया है। अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए नेताओं ने धर्म का आखाड़ा खड़ा कर दिया है। कवि मिश्र जी के अनुसार

‘आज है मजहब की गंथ बारुदी

किसने बिखेरा है, किसका इशारा है।’ (४)

अर्थात मिश्रजी का विश्वास है कि यह स्थिति बदलने वाली है। एक दिन ऐसा आ जाएगा जब देश एक सूत्र में बॅध जाएगा।

आज की राजनीति मूल्यहीन बनी है। आधुनिक लोकतंत्र में आदर्शों के स्थान पर स्वार्थ, मतलब आए हैं। आज नेता की पहचान ‘टोपी’ से होती है

उसकी कार्य से नहीं। सेवा, त्याग, समर्पण, कार्य जैसे मूल्य अब नहीं रहे। सक्सेना के शब्दों में

“पहले दाल में काला था कुछ

अब काले में दाल है।

फिर भी दुनिया जी रही है

हमको यही मलाल है।” (५)

आज के जन–प्रतिनिधि तानाशाह बने हैं। इसके बीच सामान्य व्यक्ति दिन रात खपता है, अनेक समस्याओं से जूझता रहता है। प्रजातंत्र में ‘प्रजा’ केंद्र में नहीं वह तो हाशिए पर है। ‘सरकार’ जनता की प्रतिनिधि नहीं वह तो ‘तानाशाह’ बनती है। युगीन विसंगतिपूर्ण इस राजनीति में उच्च वर्ग के लोग चैन की बन्सी बजाती है तो जनता महॅगाई की आग में झुलसती है। भ्रष्टाचार, अत्याचार, केवल जनता के लिए होता है। इस विसंगति पर नागार्जुन व्यंग कसते हैं.....

“तेल निकलता है बालू से ढलता है कलदार

उजली टोपी ऊपर है, नीचे काला बाज़ार।

पठित ठ़गों की कूटनीति से नरक बना संसार

युग–युग का दुखिया किसान, अब मान जाए क्या हार” (६)

दमन की राजनीति खेलनेवाला शासक कितना भी धार्मिक हो, लोकतंत्र का पहरेदार हो, जनता का भक्षक बन जाता है। भारतीय राजनीति के अनेक दल – दल के अनेक नेता अपनी सुविधा के अनुसार दल बदलते हैं। परिणामत: प्रादेशिक तथा केंद्रीय सरकार आज तक स्थिर शासन नहीं दे सकी। दल बदलते ये सारे स्वयं दलदल में फॅसते रहे। इस दशक का कवि चिंतित है कि ‘शासन के सिंहासन पे शपथ लेके जो चढ़े अनुशासन से वे ही फिसलते हुए मिले’ इसके पीछे दल–बदल की रणनीति है। गिरिजानंदन

'आकुल' इसलिए व्याकुल है क्योंकि भ्रष्ट रीति – नीति के कारण प्रजातंत्र 'जंगल बना है'.

आपातकाल में जनता ने बहुत कुछ सहा। सत्ताधारी कॉंग्रेस द्वारा स्थापित आपातकालीन स्थिति की प्रतिक्रियास्वरुप विकल्प में जनता पक्ष का स्वागत हुआ। रघुवीर सहाय 'आत्महत्या' में यह बात स्पष्ट करते हैं कि 'लोकतंत्र, मोटे, बहुत मोटे तौर पर, लोकतंत्र ने हमें इन्सान की शानदार जिंदगी और कुत्तम की मौत के बीच चाप लिया है।'

आज घृणा की राजनीति का बोलबाला है। आज एक दल दूसरें दल से, उच्च वर्ग निम्न वर्ग से घृणा करता है। मानवता, बंधुता, समता, एकता जैसे मूल्यों में गिरावट आई है। धर्म और सांप्रदायिकता की ओट में देश में आए दिन दंगे होते हैं। कवि मदन दागा के शब्दों में

"भारत एक धर्म निरपेक्ष नहीं

शर्म निरपेक्ष देश है" (७)

इस दशक में राम भूमि और बाबरी मस्जिद घटना, दिल्ली के आंदोलन, पंजाब के अमृतसर मंदिर पर की गई कार्रवाई, अकाली सरकार, इंदिरा गांधीजी की हत्या ये सारी घटनाएँ घृणित राजनीति के काले चित्र है।

भारत प्रजातंत्र राष्ट्र है। आज आधुनिक लोकतंत्र राजनीति के हाथ का खिलौना बन गया है अत: प्रजातंत्र की व्याख्या बदलनी पडेगी। राजनीतिज्ञ का राजनीति द्वारा राजनीतिज्ञ के लिए किया जानेवाला शासन याने लोकतंत्र। प्रजातंत्र में अनेक विरोधाभास दिखाई देते हैं। एक ओर देशभक्त क्रांतिकारी हैं तो दूसरी ओर अभाव पीड़ित जन है। बढ़ती हुई तस्करी, कालाबाजार, नोटों की राजनीति, स्वार्थपरता, उसके लिए लूट–पाट, आगजनी जैसी घटनाएँ आए दिन घटती रहती है। इसके बीच प्रजातंत्र 'स्वयं' एक प्रश्न बनकर रहा है। देश की एकता, अखंडता की रक्षा करने हेतु हर भारतीय को संघर्ष करना पड़ता है। यहॉं प्रजा की अपेक्षा व्यक्ति–विशेष की पूजा हो रही है। लोकतंत्र के नाम पर स्वार्थी, निरंकुश नेताओं ने लोकतंत्र के थोथे सिद्धांत पर शासन

करना चाहा, लेकिन उनकी एक ना चली। लोकतंत्र के थोथे सिद्धांतों का पर्दाफाश करते हुए कवि प्रजातांत्रिक पुरानी प्रणाली को हटाना चाहता है। राजनीतिक विसंगति, विद्रुपता, विडंबन के कारण सारा परिवेश विषाक्त बना है। कवि इस अंतर्विरोध का चित्रण करता है.....

"पूछेगा संसद में भोलाभाला मंत्री

मामला बताओ, हम कार्रवाई करेंगे।"

हाय—हाय करता, हॉ—हॉ करता हुआ, हें—हें करता हुआ दल का दल.....। (८)

राजनीतिज्ञों ने लोकतांत्रिक प्रणाली का दुरूपयोग किया। आपात काल के बाद केंद्रीय सरकार बहुमत से किसी राष्ट्रीय मद्दे पर असफल रही। इस तरह का प्रजातंत्र कवि धूमिल को षडयंत्र—सा लगता है।

आधुनिक शासन प्रणाली में सरकार और जनता, शासन के दो प्रमुख अंग हैं। सच्चा शासक जनता को आगे ले जानेवाला, जनहित की बात करने वाला होता है। वह शक्तिशाली, सेवाभावी होता है। लेकिन वर्तमान में प्रजातंत्र भीड़तंत्र में बदल चुका है। प्रजा भेड़—बकरी है ऐसा मानकर शासक हाथ में लाठी लेकर उन्हें हिकारता है। निर्दोष, निर्बलों पर अत्याचार करना उसका उद्देश्य होता है। राजनीतिज्ञ बहुत—ही चालाक होते हैं। वे गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। चुनाव के पहले उनकी बोली कोयल—सी होती है, चुनाव में मेंढक—सी, चुनाव के बाद कौवे—सी होती है। नेता, मंत्री—गण जनता पर आश्वासनों की वर्षा करते हैं। नेता, मंत्री—गण जनता पर आश्वासनों की वर्षा करते हैं, लंबे—चौड़े वादे करते हैं, जिनकी पूर्ति वे कभीकभार करते हैं। आमतौर पर उनकी कथनी और करनी में बड़ा अंतर होता है। उनमें अवसरवादिता भरपूर है। वे हवा का रुख देखकर बहते चले जाते हैं, अपने विचार और बोल बदलते हैं। ऐसे झूठ, धोखेबाज राजनीतिज्ञों की चापलूसी करनेवाले बहुत सारे उनके चेले होते हैं। वे भी उगते हुए सूरज की पूजा करते हैं।

आज के राजनीतिज्ञ देश में कम विदेश में अधिक रमते हैं। उनके लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न महत्वपूर्ण और जनता के प्रश्न गौण—से लगते हैं। सदाचार, सत्—विचार, चरित्र, नैतिकता से इनका कुछ संबंध ही नहीं होता। भ्रष्ट नेताओं ने इस देश को कई बार युद्ध की विभीषिका में झोंक दिया है। भय और आतंक के परिवेश में रहनेवाला व्यक्ति संशकित रहता है। उसके मन में असंतोष, व्यवस्था के प्रति खीझ और पथ पर जनता को छोड़कर बहुत सारे घोटाले करते हैं। अपनी दुरंगी नीति के कारण वे सच को झूठ, अच्छे को बुरा बना देते हैं। इनके काले कारनामों से ही देश में अव्यवस्था निर्माण हुई है। विश्वनाथ प्रसाद बटुक के शब्दों में.....

"प्रजातंत्र का कर रहे, सरे आम जो खून

अपनी रक्षा के लिए जो बदल रहे कानून

कैसे संभव एकता, क्यों हो देश अखंड

नेता पाखंडी हुए, राजनीति पाखंड।" (९)

नवें दशक के कवियों ने अपने समकालीन यथार्थ को वाणी दी है। उन्होंने आज के नेताओं की स्वार्थलोलुपता, सत्ता की लालसा, भाई—भतीजावाद, आत्मकेंद्री प्रवृत्ति जैसी मानसिकता को रेखांकित किया है। सन् १९८० से लेकर सन् १९९० तक भारतीय राजनीति में बहुत बदलाव आए। गठबंधन की अस्थिर सरकार दलगत राजनीति से मुक्त नहीं हो सकी। परिणामस्वरुप महॅगाई, बेरोबजगारी, अराजकता में बढोत्तरी हुई। कवियों ने अस्थिर सरकार की नीतियों की आलोचना की। कवि बटुक कहते हैं —

"आज सीट की जीत पर, पीट विजय की ढोल

अविश्वास प्रस्ताव कल, खोलेगा सब पोल।" (१०)

इस दशक में सरकार ने बाजारी व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाए और दशक के अंत में नई व्यवस्था के सामने घुटने भी टेक दिए। देश में अनेक समस्याएॅ

निर्माण हुई। जनता इसके बीच हताश और निराश हुई। महॅगाई और गरीबी जैसी समस्याओं का तो कभी खात्मका ही नहीं होता। कवि नागार्जुन कहते हैं

"देशी गेहूँ पड़ दिखाए सपनों के कोठार में

गिनती के चावल दोते हैं महॅगाई की मार में।" (११)

इस दशक में जनसंख्या में बढ़ौती हुई। निर्धनता ने गरीबों को मार डाला। संपूर्ण भारतीय मानस का मोहभंग हो गया। 'गरीबी हटाव' अभियान तैयार हुआ। लेकिन अंत में वह एक 'नारा' बन गया। कवि धूमिल इस कटुसत्य का उद्‌घाटन करते हैं।

"एक आदमी रोटी खाता है

एक दूसरा आदमी रोटी बेलता है

लेकिन एक तीसरा आदमी भी है

जो न खाता है न बोलता है

वह महज रोटी — से खेलता है

वह कौन है? पर मेरी संसद मौन है।"(१२)

समाज के अशिक्षित लोगों को काम नहीं मिलता, शिक्षित वर्ग को नौकरी नहीं मिलती। बेरोजगारी की समस्या से हताश, निराश, विवेकहीन युवा हड़ताल, मार—काट, तोड़—फोड़ में हिस्सा लेता है। हिंसा के मार्ग पर आगे बढ़ता है।

आज की सबसे बड़ी समस्या है 'भ्रष्टाचार'। देश के कोने—कोने में यह व्याप्त है। डॉ. मदन डागा के शब्दों में .....

"इसलिए कहता हूँ, हमदम मेरे दोस्त,

ऑफिस में है काम, नोट लेकर जाओ

अफसर के हो द्‌वार बंद

तो चपरासी को भेंट चढाओ।"(१३)

'सांप्रदायिकता' की समस्या देश के लिए नई नहीं है। इसके कारण तो देश का बॅटवारा हुआ। इस दशक के कवि ने एक ओर सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला है, तो दूसरी ओर देश की एकता की दृष्टि से इससे दूर रहने का मार्ग बनाया है।

नवें दशक में देश को अंतर्गत लडाईयों लडनी पड़ी जिसका भयावह परिणाम नजर आया। बॉगला देश के निर्वासितों का बंदोबस्त, पंजाब में आतंकवाद का विरोध, गोरखलॅड आंदोलन, मीरत का जातीय दंगा, अमृतसर— ऑपरेशन ब्लॅक थंडर, अयोध्याकांड इन घटनाओं ने जनमानस को आंदोलित किया — युद्ध हो या अण्वस्त्र दोनों मानव के लिए घातक ही है। इंदिरा गांधीजी के शासन काल में पोखरण में अणुशक्ति का श्रीगणेश हुआ। अपने विकास, प्रगति, सुरक्षा के तौर पर युद्ध और अण्वस्त्र की ओर सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। फिर भी वैश्विक स्तर पर विनाश के रुप में यह अभिशाप मात्र है — राजेश जोशी के शब्दों में —

"पत्नी बैठी होगी थाली परोसकर

और कौर तोडने से पहले

गिर पडेगा

न्यूट्रान बम।"(१४)

दशक के कवियों ने सत्ता के भयंकर शोषणतंत्र का विरोध किया है। सत्ताशीध अपने स्वार्थ के लिए भाषावाद, जातिवाद, प्रांतीयवाद, सांपदायिकता को बढ़ावा देकर मानवता विरोधी बातों का प्रचार करते हैं। राजनीति को 'सेवा' न मानकर 'मेवा' समझकर अपना पेट भरते हैं। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक स्तर पर सामान्य जनता का शोषण करते हैं। कवियों ने सत्ता के भयंकर शोषण का विरोध किया है।

शक्तिशाली शासक निर्बलों पर अत्याचार करते हुए, उसका शोषण करते हुए शासन करता है। इस स्थिति में सामान्य मनुष्य अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है। आज वह जी रहा है, कल क्या होगा मालूम नहीं। विनोद दास के शब्दों में –

"क्या इस साल भी, पृथ्वी पर बहता रहेगा रक्त

क्या इस साल भी, जीवित रहूँगा, पिछले साल की तरह?"

प्रजातंत्र में अन्याय की तीव्रता बढ़ चुकी है। हर क्षेत्र में व्यक्ति समाज पर अन्याय हो रहा है। अर्थात अनीति के इस दौर में न्याय मिलना बेकार है न्याय दिलानेवाले कुछ और ही हैं। इन लोगों की अदालत से उम्मीद नहीं की जा सकती। कानून, वकील, न्यायधीश सब इनके हाथ में हैं। प्रजातंत्र में व्यक्ति विशेष ही सर्वेसर्वा हो जाता है। न्यायपालिका उसके हाथों की कठपुतली बन जाती है। जनता को ठगाने के लिए ऐसे शासक नित नए हथकडों का प्रयोग करते रहते हैं। ऐसे भूखे शासक का तुष्टीकरण भी अजीब ही होता है। सत्ता के भूखे शासक विश्व–शांति, विश्व–मैत्री, विश्व–बंधुत्व, विश्व–मानवता का संदेश केवल मुखरित करते हैं। परंतु प्रत्यक्ष व्यवहार में उसे लाते नहीं। धन, दौलत, शोहरत से उनका पेट भरता है तो डकारें भरते हुए वे अपनी कुर्सी अपने खानदान के वारीस को देना चाहते हैं–

ब्रजेंद्र अवस्थी के शब्दों में.....

"सिर्फ तुष्टीकरण की नीति अपनाए हुए

नेता वोटों के भुनाने का जगाते मंत्र है

बेटों को, दामादों को दिलाते हुए राजमद

लोक को मिटाकर चलाते लोकतंत्र है।

जातिवाद, वंशवाद, वर्गवाद के नियंता

जब चाहे ऐंट देते हुए शासन का यंत्र है।" (१६)

जिस समाज में नारी का स्थान ऊँचा होता है, उसका सम्मान होता है वह समाज प्रगतिवादी कहलाता है। देश को आजादी प्राप्त हुई फिर भी भारतीय समाज में नारी का स्थान गौण है। आज भी कई दु:शासन उसकी इज्जत लूटने की लालसा करते हैं। नारी सम्मान की नैतिकता पूरे समाज की है, उसकी आशा–निराशा, आदि का चित्रण नवें दशक की कविता में मिलता है परंतु राजनीति के संदर्भ में नारी का स्वतंत्र रुप चित्रित नहीं हुआ। वह जनसाधारण के रूप में व्यक्त हुई। लेकिन नारी स्वयं 'शक्ति' है, स्वयंसिद्धा है। इसे स्वीकार करना ही पड़ता है। आठवें, नवें दशक में देश की धूरा एक स्त्री ने सँभाली थी। यह इंदिरा गांधीजी का शासनकाल था। कवियों ने उनके 'राजनीतिज्ञ' रूप पर व्यंग भी कसा है। अधिकांश कवियों ने अपने काव्य में अहिल्या, द्रोपदी, सावित्रि, मैत्रेयी के मिथकों द्वारा नारी की प्रतिमा और स्थिति का अंकन किया है।

राजनीति की दृष्टि से यह दशक एक ओर अशांति का था तो दूसरी ओर प्रगति का। देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था। सर्वत्र आक्रोश और निषेध का स्वर सुनाई दे रहा था। आधुनिक राजनीति में क्रांति की व्याख्या बदल गई। आज आलस्य छोड़कर परिश्रम करना क्रांति है, खोखले आदर्शों को छोडकर आगे बढ़ना क्रांति है। आज सर्वत्र बेरोजगारी, भूख, गरीबी, विषमता सर्वत्र फैली हुई है। अत: छोटे बड़ों से, नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से कई प्रश्न करती हैं। उनके मस्तिष्क की अशांति से प्रश्न निर्माण होते हैं और प्रश्नों से क्रांति का जन्म होता है। आधुनिक प्रजातंत्र में शासकों के हाथों सत्ता, धन, चैन, आराम होता है, जनता उपेक्षित रहती है तो क्रांति का जन्म होता है। बालकवि बैरागी के अनुसार जो खेतों में काम करते हैं, खपते हैं, बोझ ढोते हैं वे ही क्रांति के जनक हैं।

भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। लेकिन आज धर्म और सांप्रदायिकता को लेकर लोग आपस में लड़ते हैं, झगड़ते हैं। कवि मदन डागा के अनुसार

"संप्रदाय का काला सॉप, रूप बदलकर

अपनी पिटारी के आस–पास

फन फैलाकर नाचता है।" (१७)

सांप्रदायिकता, समता, न्याय, सुरक्षा, मानवता खतरे में पड़े हुए मूल्य हैं। मनुष्य के बाहर और भीतर अविराम युद्ध चल रहा है। नवें दशक के कवियों ने अपने युग को वाणी दी हैं फिर भी कवि निराश नहीं हुए। मनुष्य की सदाशयता में उन्हें विश्वास और आस्था थी। उन्होंने प्राप्त परिस्थिति में आशावादी दृष्टिकोण रखा। उन्हें विश्वास है कि कल नया मसीहा जन्म लेगा। डॉ. जगदीश चतुर्वेदी के शब्दों में –

"यों क्रांति का नाम इतिहास में का कलंकित हुआ है।

बिगत क्रांतिकारी आज के धनाढ्य हैं

एक गुमनाम समूह ही करेगा कुछ काम

तभी देश में होगा परिवर्तन

चहारों पर खिलेंगे रेशमी फूल और

युवतियॉ भद्र व्यवहार से सडकों पर चलेंगी,

प्रेम के साथ–साथ देश को प्रेरणा देने " (१८)

निष्कर्षत: नवें दशक के आरंभिक दौर की कविता में आक्रोश की अभिव्यक्ति अधिक हुई। उसमें विद्रुप–व्यंग–विडंबन–प्रहसन की विधियॉ पाई जाती हैं। वामपंथी क्रांतिकारी चेतना के कवियों ने व्यवस्था विरोध के नाम पर एक से एक अलग मुहावरों से जनपक्षधरता का प्रदर्शन किया। नवें दशक की कविता प्रबंध, मुक्तक, गज़ल, लंबी कविता, लघु कविता, हाइकू आदि विविध रुपों में बहती रही जिसका झुकाव जनता की ओर अधिक रहा। एक गैर साम्यवादी एवं तानाशाही से मुक्त प्रजातंत्र के अध:पतन की यह कविता आघात सहते हुए आगे बढ़ती रही। अधिकांश कवियों ने राजनीतिक षड्यंत्र के खिलाफ आवाज उठाई। इन्होंने राजनीति के साथ–साथ जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष पर भी ध्यान दिया। अत: उनका काव्य नारेबाजी से बचकर व्यवस्था के विरुद्ध उठाई हुई आवाज़ है। दशक की कविता में यथार्थ की

प्रतिक्रिया में अनास्था निराशा के स्थान पर आस्था और आशा के स्वर सुनाई देते हैं। नवें दशक के कवियों ने विषयानुरुप बिंब, प्रतीक, मिथक, अलंकार का प्रयोग किया। विसंगति, विरोधाभास परिस्थिति की मॉग थी, इसलिए उन्होंने व्यंग शैली का अधिक प्रयोग किया। व्यंग्यजीवी कवियों की सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है —

मधुप—पांडेय, अशोक चक्रधर, सत्यदेव, काका सुधरसी, हुल्लड मुरादाबादी, सुरेंद्र शर्मा, शैल चतुर्वेदी, प्रेमकिशोर पटाखा आदि।

संदर्भ संकेत

१	खिचडी विप्लाव देखा हमने	नागार्जुन
२	सहमी हुई शताब्दी	ललित शुक्ल
३		दिनेश रघुवंशी
४	मोर्चे सॅभालो	डॉ. जगमोहन मिश्र
५	कोई मेरे साथ चलो	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
६	हजार — हजार बाहोंवाली	नागार्जुन
७	शाकाहारी कविताएॅ	डॉ. डागा मदन
८	आत्महत्या के विरुद्ध	रघुवीर सहाय
९	बटुक की कटुक सतसाई	विश्वनाथ प्रसाद बटुक
१०	बटुक की कटुक सतसाई	विश्वनाथ प्रसाद बटुक
११	पुरानी जूतियों का कोरस	नागार्जुन
१२	कल सुनना मुझे	धूमिल
१३	शाकाहारी कविताएॅ	डॉ. डागा मदन
१४	मिट्टी का चेहरा	राजेश जोशी

१५ नए साल पर विनोद दास

१६ जो न काल से हारा ब्रजेंद्र अवस्थी

१७ उपनगर में वापसी बलदेव वंशी

संदर्भ ग्रंथ

१ आधुनिकतावाद — दुर्गाप्रसाद गुप्ता आकाशदीप प्रकाशन सं. २००

२ कविता के मानवीय — डॉ. चमनलाल शिल्पायन प्रकाशन सं. २०००

सरोकार

३ कविता के सौ. बरस — लीलाधर मंडलोई शिल्पायन प्रकाशन नई दिल्ली सं. २००

४ नई रचना और रचनाकार — डॉ. दयानंद शर्मा अन्नपूर्णा प्रकाशन नई दिल्ली १९९०

५ वीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध — डॉ. सुधा गुप्ता ईशान प्रकाशन २००४

६ समकालीन कवि और काव्य — कल्याणचंद्र चिंतन प्रकाशन १९९६

७ साठोत्तरी हिंदी उपन्यास में

राजनीतिक चेतना कृष्णकुमार 'चंद्र' दिनमान प्रकाशन १९८४

८ साठोत्तरी हिंदी काव्य में

राजनीतिक चेतना — जे. एस. गंभीर विद्या प्रकाशन १९९२

९ स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में

जीवनमूल्ये — डॉ. भरतकुमार सिंह शब्दशक्ति प्रकाशन १९९३

११ हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि — डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना विनोद पुस्तक मंदिर आगत १९९०

१२ हिंदी साहित्य का इतिहास — डॉ. विजयपाल सिंह जयभारती प्रकाशन २००३

१३ हिंदी साहित्य का आधुनिक काल — डॉ. इश्वरदत्त शील गरिमा

डॉ. आभा रानी प्रकाशन २००७